अपभ्रंश भाषा का अर्थ- बिगड़ा हुआ (500 ई. से 1000 ई. तक)

अपभ्रंश भाषा का सर्वप्रथम नामोल्लेख - आचार्य चण्ड ने किया

सर्वश्रेष्ठ काव्य - पउम चरिउ, रचनाकार - स्वयंभू

सबसे बड़ा ग्रंथ - महापुराण, रचनाकार - पुष्पदंत

भेद -

डॉ याकोबी के अनुसार चार भेद हैं -

1 पूर्वी, 2 पश्चिमी, 3 उत्तरी, 4 दक्षिणी

डॉ तगारे के अनुसार तीन भेद हैं -

1 पूर्वी, 2 पश्चिमी, 3 दक्षिणी

डॉ नामवर के अनुसार दो भेद हैं -

पूर्वी तथा पश्चिमी

महापुराण को दो भागों में विभाजित किया गया है -

1. आदिपुराण - ऋषभदेव व उनके पुत्र का वर्णन किया गया है

2. उत्तरपुराण - महापुरुषों का चरित्र राम कथा व श्याम कथा का वर्णन है

अपभ्रंश भाषा में ट वर्ग की अधिकता है

OBLYPREPS

अपभ्रंश के वर्णमाला का ज्ञान

स्वर - 10

ह्रस्व - अ, इ, उ, ए, ओ / दीर्घ - आ, ई ऊ, ए, ओ

व्यंजन - ञ, न, श, ष, ये अक्षर नही है

प्रमुख रचनाकार व उनकी रचनाएं

सरहपाद - दोहाकोश - जाव ण आप जडज्जइ ताव ण सिस्स करेइ

अंधा अंध कणाव इव

1. वेण्णाव कूव पड़ेइ

रचनाकार रचनाएं

स्वयं भू - पउम चरिउ

पुष्यदंत - महापुराण

रामसिंह - पाहुण दोहा

रइघू - करकंड चरिउ

अपभ्रंश को ही कवियों ने अवहट्ट कहा है , अवहट्ट का उल्लेख ठाकुर ज्योतिरीश्वर ने अपने ग्रन्थ वर्ड रत्नाकर में इसका प्रयोग किया है, इसके अलावा हिंदी का जो उद्भव है

Video/Live Classes Mock Test Series Discussion Forum

"भीड़ हमेशा आसान रास्ते पर चलती है, जरुरी नहीं वो सही है। अपने रास्ते खुद चुनिए, आपको आपसे बेहतर और कोई नहीं जानता।"

अपभ्रंश से मिलता - जुलता है तथा इसके सर्वनाम भी अपभ्रंश से मिलते हैं|

Visit on:- https://youtu.be/N-7EGV3mTT4

#अपभ्रंशभाषा #अपभ्रंश

Sharing Is Caring
If you found it useful, don't forget to share your friends.

OBLYPREPS

"भीड़ हमेशा आसान रास्ते पर चलती है, जरुरी नहीं वो सही है। अपने रास्ते खुद चुनिए, आपको आपसे बेहतर और कोई नहीं जानता।"